ॐ

तत्सद्ब्रह्मणे नमः ॥

एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म ॥

अथ अथर्ववेदीयप्रश्नोपनिषद् ॥

इस उपनिषद् में कबंधी आदि छः ऋषियोंने शिष्यभाव से पृथक् २ प्रश्न किये हैं और उनके उत्तर पिप्पलादनामक आचार्य ने दिये हैं। एतदर्थ इस उपनिषद् का नाम प्रश्नोपनिषद् है। उसकी भाषाटीका श्रीशंकराचार्यजी के भाष्य और आनन्दगिरि टीका और पंडित पीताम्बरजी के अनुवादके आशय पर गुरु शिष्य के संवाद द्वारा हुई है ॥

UNIVERSITÄTS-BIBLIOTHEK HEIDELBERG
http://digi.ub.uni-heidelberg.de/diglit/atharvavediyaprasnopanisad1921/0005
gefördert durch die DFG